Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

उत्तराखंड के राजी समाज का सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन

राकेश सिंह फकलियाल

सहायक प्रोफेसर,
डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर सिदो-कान्हू मुर्मू दलित एवं जनजातीय अध्ययन केंद्र
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र

सारांश

राजी या वनराजी जनजाति उत्तराखंड के आदिवासी समाज में अपनी विशिष्ट जीवनशैली और सांस्कृतिक पहचान के कारण अध्ययन का महत्वपूर्ण विषय है। यह जनजाति शिकार और भोजन-संग्रह पर आधारित जीवनशैली अपनाने वाले दुर्लभ समाजों में आती है, जिसने आधुनिक प्रभावों के बावजूद अपनी सांस्कृतिक विशेषताओं को संरक्षित रखा है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य राजी समाज की पारिवारिक संरचना, जनसंख्या, शिक्षा, विवाह प्रणाली, महिलाओं की स्थिति, श्रम विभाजन, आर्थिक और व्यावसायिक गतिविधियों, पर्यटन और सामाजिक रीति-रिवाजों के संदर्भ में निरंतरता और परिवर्तन के तत्वों का विवेचन करना है। साथ ही, यह अध्ययन उनके ऐतिहासिक, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिससे उनकी सामाजिक स्थिति और विकास की दिशा को समझा जा सके।

प्रस्तावना

उत्तराखंड के आदिवासी समाज में राजी समुदाय का विशेष महत्व है। यह समाज ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से अपने कुमाऊँनी पड़ोसियों से भिन्न है। उनकी जीवनशैली मुख्यतः शिकार, भोजन-संग्रह और पशुपालन पर आधारित रही है। हालांकि कुछ विद्वानों ने इस जनजाति का अध्ययन किया है, जैसे ए. के. कपूर (1994, 1996), डी. एन. मजूमदार (1963), फिर भी इस पर समग्र और व्यवस्थित शोध का अभाव रहा है।

राजी समाज के अध्ययन के लिए आवश्यक है कि कुमाऊँनी समाज की सामाजिक संरचना को समझा जाए क्योंकि उसी ने राजी समाज के विकास को प्रभावित किया है। कुमाऊँ और गढ़वाल की सामाजिक संरचना में कृषक वर्ग (खास या खसिया) और कारीगर वर्ग (डोम) की परंपरा रही है। इनके ऊपर ब्राह्मण और राजपूत जैसे उच्च वर्ग रहे हैं। राजी समाज ने स्वयं को राजपूत वंशज मानकर अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखी है, लेकिन उनकी पिछड़ी सामाजिक स्थिति के कारण उन्हें PTG के रूप में वर्गीकृत किया गया है। PTG का अर्थ है "Primitive Tribal Group" यानी आदिम जनजातीय समूह।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

हिमालय क्षेत्र में मंगोलॉयड, इंडो-मंगोलॉयड और इंडो-आर्यन जनजातियों का एक महान मिश्रण है। यह क्षेत्र 1500 ईसा पूर्व से बसाया जाने लगा और इसके बाद विभिन्न शताब्दियों में प्रवास हुआ। राजियों के आदिम

जीवन को पहली बार ब्रिटिश विद्वानों ने देखा। ब्रिटिश कालीन अध्ययन में उन्हें शिकारी और भोजन-संग्रहक जनजाति माना गया। आर्थिक आवश्यकताओं और सामाजिक संरचना के कारण राजी जनजाति लंबे समय तक खानाबदोश रही। गुफाओं, झोपड़ियों और अस्थायी आवासों में निवास करना इनकी जीवनशैली का अभिन्न हिस्सा था। पशुपालन और वनस्पति संग्रह इनके स्थायी जीवन और आर्थिक गतिविधियों का केंद्र थे।

ग्राम और बस्ती जीवन

राजियों की बस्तियाँ सामान्यतः छोटी और सीमित जनसंख्या वाली होती हैं। आर्थिक मजबूरियों के कारण कुछ परिवार मैदानी इलाकों में पलायन कर चुके हैं। गाँवों का सामाजिक जीवन व्यक्तिवादी है और इनमें कोई केंद्रीकृत शासन नहीं होता। बस्तियों में मुखिया या प्रधान का पद वंशानुगत होता है। बुजुर्ग पंचायत आपसी विवादों के समाधान में मध्यस्थ की भूमिका निभाते हैं। ग्राम जीवन आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों का केंद्र है। राजी गाँवों की स्थलाकृति, जनसंख्या और पारिस्थितिकी भिन्न होती है। अधिकांश गाँव पहाड़ी क्षेत्रों में स्थित हैं, जबकि कुछ मैदानी क्षेत्रों की ओर पलायन कर चुके हैं।

पारिवारिक संरचना

राजी समाज में परिवार की मुख्य इकाई एकल परिवार है। आर्थिक कारणों से विवाह के तुरंत बाद पुत्र माता-पिता से अलग होकर नया घर बसाता है। कुछ मामलों में संयुक्त परिवार भी पाए जाते हैं, जहां संयुक्त श्रम और सामूहिक प्रयास अधिक होता है। परिवार में संबंध आपसी सम्मान, सहयोग और समानता पर आधारित होते हैं। पति-पत्नी का रिश्ता अधीनता की बजाय समान अधिकारों और सहयोग पर आधारित है। उत्तराधिकार पितृसत्तात्मक है, संपत्ति पुत्रों में समान रूप से बटी रहती है जबकि बेटियों को विरासत का अधिकार नहीं है। गोद लेने की प्रक्रिया भी निःसंतान दंपतियों के लिए प्रचलित है।

श्रम विभाजन

राजी समाज में श्रम विभाजन लचीला और सामूहिक है। पुरुष शिकार, पशुपालन और कृषि कार्य करते हैं, जबकि महिलाएँ वन से आवश्यक सामग्री इकट्ठा करती हैं और घर के कामकाज में योगदान देती हैं। बच्चों को भी विभिन्न कार्यों में शामिल किया जाता है। कुछ परिवारों में महिलाएँ बाज़ार में हस्तशिल्प बेचने और प्रशिक्षण प्राप्त करने में संलग्न हैं।

सामाजिक संबंध और मनोरंजन

राजी समाज में कुछ रिश्तेदारों के बीच हास्यपूर्ण और मज़ाकिया संबंध प्रचलित हैं। यह सामाजिक सीमाओं के भीतर रहते हुए पारस्परिक मेलजोल को प्रोत्साहित करते हैं। इसके विपरीत, कुछ रिश्तों में दूरी और परहेज़ बनाए रखा जाता है, जैसे बहू और ससुर के बीच। ये नियम पड़ोसी समाज से प्रभावित भी हुए हैं।

जातिवाद और सामाजिक भेदभाव

राजी समाज में जातिगत भेदभाव की स्पष्ट परंपरा रही है। वे स्वयं को राजपूत मानते हैं और निम्न जातियों के साथ भोजन या जल ग्रहण से परहेज़ करते हैं। हालांकि उनके स्थानीय कुमाऊँनी उच्च जातियाँ उनके इस दावे को अधिक महत्व नहीं देतीं। यह सामाजिक अलगाव और गौरव की भावना बनाए रखता है।

विवाह प्रणाली

राजी समाज में विवाह के विभिन्न रूप प्रचलित हैं। पारंपरिक नियमों के अनुसार निकट संबंधी विवाह वर्जित हैं। विवाह समारोह में संगीत, नृत्य और सामुदायिक उत्सव की प्रधानता होती है। आधुनिक समय में प्रेम विवाह और बहिर्विवाह की प्रथा बढ़ रही है, जबकि पारंपरिक विवाह पद्धति अभी भी संरक्षित है।

भूमि, आवास और आर्थिक परिवर्तन

पहले राजी समाज खानाबदोश था और अस्थायी झोपड़ियों में निवास करता था। बीसवीं सदी के अंतिम दशकों में सरकारी प्रयासों से स्थायी घर और खेती योग्य भूमि प्रदान की गई। आज अधिकांश राजी परिवार पक्के या अर्ध-पक्के घरों में रहते हैं, और पशुपालन व कृषि मुख्य आजीविका का हिस्सा है। कुछ घर दो मंजिला हैं, जिसमें नीचे पशु और ऊपर परिवार रहता है।

महिलाओं की स्थिति

महिलाएँ पारंपरिक और आधुनिक दोनों श्रम में संलग्न हैं। घर, वन और बाज़ार से संसाधन एकत्र करना, हस्तशिल्प और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेना उनकी मुख्य भूमिका है। परिवार और समाज में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण है, और वे पारिवारिक निर्णयों में अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावशाली हैं।

उत्तराधिकार और संपत्ति वितरण

संपत्ति का वितरण पितृसत्तात्मक प्रणाली के अनुसार होता है। घर का मुखिया सबसे बड़े पुत्र को माना जाता है। संपत्ति विवाद ग्राम पंचायत या पटवारी द्वारा निपटाए जाते हैं। महिलाएँ संपत्ति में सीधा हिस्सा नहीं पातीं, लेकिन व्यक्तिगत वस्त्र, गहने और अन्य सामान पुत्रों या पति को विरासत में मिलते हैं।

आदिवासियों की आर्थिक और व्यावसायिक संरचना

आदिवासियों की आर्थिक और व्यावसायिक संरचनाओं में कई बदलाव आए हैं। कृषि के आदिम स्वरूप ने संस्कृति के साथ-साथ सेवा-आधारित अर्थव्यवस्था में भी परिवर्तन किया है। पहले आदिवासियों का झुकाव या तो औद्योगिक क्षेत्रों की ओर था या वे स्थायी खेती में इतने व्यस्त थे कि उन्हें कृषि के सभी साधनों की जानकारी थी। हिमालय की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि, पशुपालन, अग्नि विज्ञान और व्यापार पर आधारित है। हिमालय का क्षेत्रफल 195,300 वर्ग किमी है। इसमें 28.8 प्रतिशत भूमि कृषि के अंतर्गत, 13.7 प्रतिशत अल्पाइन चरागाहों के अंतर्गत और 122 प्रतिशत वनों के अंतर्गत है। पर्वतीय क्षेत्र में विविध प्रकार की कृषि पद्धतियाँ पाई जाती हैं, जिनमें सीढ़ीनुमा कृषि और झूम या स्थानान्तरित कृषि प्रमुख हैं। जनजातीय अर्थव्यवस्था के संबंध में मजूमदार का कहना है कि "जनजातियों का वर्गीकरण उनके आर्थिक जीवन और व्यवसाय के आधार पर करना कठिन है, क्योंकि अधिकांश जनजातियाँ सीमांत संस्कृतियों से आती हैं या एक से अधिक व्यवसायों का पालन करती हैं।" राजियों की आर्थिक गतिविधियाँ शिकार, मछली पकड़ना, कृषि और दिहाड़ी मजदूरी में परिवर्तित हुई हैं। उनकी आजीविका का ढांचा घने जंगलों और पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाली अन्य जनजातियों से तुलनीय है।

शिकार और भोजन-संग्रह की प्रथा

राजी समाज का शिकार और भोजन-संग्रह पर आधारित जीवन आज भी उनके सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा है। पारंपरिक रूप से, पुरुष जंगल में शिकार करते हैं और महिलाएँ जड़ी-बूटियाँ, फल और अन्य वनसंपदा एकत्र

करती हैं। सामूहिक शिकार और वन संपदा संग्रह से सामाजिक मेलजोल और सहयोग की भावना बढ़ती है। यह अभ्यास उनके पारंपरिक ज्ञान, पर्यावरणीय समझ और जैव विविधता संरक्षण की क्षमता को दर्शाता है।

पर्यटन और आधुनिक रोजगार का प्रभाव

अल्पसंख्यक आदिवासी समुदाय के रूप में, राजियों ने धीरे-धीरे पर्यटन और सेवा क्षेत्र में अवसर प्राप्त करना शुरू किया है। स्थानीय पर्यटन स्थलों में गाइडिंग, हस्तशिल्प और पारंपरिक सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ उनके लिए रोजगार का साधन बन रही हैं। आधुनिक शिक्षा और सरकारी योजनाओं ने युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान किए हैं। इसके परिणामस्वरूप, पारंपरिक शिकार और वन-संग्रह पर उनकी निर्भरता धीरे-धीरे कम हुई है।

निरंतरता और परिवर्तन

राजी समाज में सामाजिक संरचना और जीवनशैली में निरंतरता और परिवर्तन दोनों दिखाई देते हैं। स्थायी जीवन, शिक्षा, कृषि, सरकारी योजनाओं, पर्यटन और आधुनिक तकनीक ने समाज में बदलाव लाए हैं। फिर भी, पारंपरिक रीति-रिवाज, जातिगत पहचान और पारिवारिक सहयोग जैसी विशेषताएँ जीवित हैं। यह परिवर्तन और निरंतरता का संगम राजी समाज की विशिष्ट पहचान बनाता है।

निष्कर्ष

राजी समाज एक आदिम जनजाति से आधुनिक समाज की ओर विकसित होते हुए भी अपनी सांस्कृतिक विशेषताओं, पारिवारिक संरचना और आर्थिक पहचान को बनाए रखने में सफल रहा है। स्थायी घर, कृषि, पर्यटन और सरकारी योजनाओं ने उनके जीवन में स्थिरता और विकास लाया है। श्रम विभाजन, पारिवारिक सहयोग, विवाह प्रणाली, शिकार, भोजन-संग्रह, सामाजिक रीति-रिवाजों और आधुनिक रोजगार में संतुलन बनाए रखने की उनकी क्षमता उन्हें एक अनूठा आदिवासी समाज बनाती है।

संदर्भ :

1. रामचंद्र गुहा 1999, द अनक्विवयर फूड्स, नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, , पृ. 11.
2. ए पाल, संपादक: द हिमालया एनवायरनमेंट, इकोनॉमी एंड सोसाइटी, नई दिल्ली विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड, 1995, पृ. 212
3. विश्वम्भर प्रसाद सती और कमलेश कुमार 2004, उत्तराँचल बहुतायत और कमी की दुविधा, नई दिल्ली: मीनल पब्लिकेशंस, पृ.97.
4. नेल द बॉन्डरलैंड ऑफ़ कल्चरल ट्रांसफ़ॉर्मेशन ने डेटा पुडिंग 18, 1994 पृ. 140-141
5. ए. के. कपूर 1994, कपूर, मध्य हिमालय में पारिस्थितिकी और जनजातीय लोग कपूर और सतवंती कपूर (संपादक)। मध्य हिमालय में पारिस्थितिकी और जनजातीय लोग एमडी पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
6. ए. के. कपूर1996, पारिस्थितिकी, जनसांख्यिकी प्रोफ़ाइल और समाज एक विकल्प का विकास (एक राष्ट्रीय की कार्यवाही) ज्ञानोदय प्रकाशन, नैनीताल।
7. डी. एन. मजूमदार 1942, थारू और उनका ब्लड ग्रुप, इन जर्नल ऑफ रोयल अस्थेटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, वॉल. 8, भाग 1 पृ. 33
8. डी. एन. मजूमदार और मदन टी.एन., 1963, सोशल एंथ्रोपोलॉजी हाउस, दिल्ली।
9. डी.एन. मजूमदार1955, भारत की जातियाँ और संस्कृतियाँ, एशिया बॉम्बे।